

अञ्चिन्वा जानु जुहोति CāndraVr. on v. 4. 113 = KāśiVr. on P. vii. 2. 53; Bhatti. 9. 40.

**अञ्चु** (añc-u) 1 verbal root *añc-* A अञ्चु गतिपूजनयोः DhātuPā. i. 203 = DhātuPra. i. 185 (21. 19) = DhātuVr. i. 190; DhātuPā.(Sāk.) i. 337; KāvyaKāVr. 92. 25 (3. 5); B अञ्चु गतौ याचने च DhātuPā. i. 915 = DhātuPra. i. 865 (63. 7) = DhātuVr. i. 852; C अञ्चु विशेषणे DhātuPā. x. 198 = DhātuPra. x. 203 (142. 23) = DhātuVr. x. 201; D *-añc* as a derivative suffix अपपरिवहिरञ्चवः पञ्चम्या P. ii. 1. 12; JaineVyā. i. 3. 10 (48. 21); ऋत्विग्दधृक्खण्दिद्युष्णिगञ्चुञ्जिञ्जुञ्जां च P. iii. 2. 59; JaineVyā. ii. 2. 57 (107. 9); CāndraVyā. i. 2. 50; MugdhaBo. 3. 134 (31. 1); अञ्चुरूपे उत्तरपदे इत्यर्थात् LaSābdeSe. i. 342. 22; i. 346. 20.

**अञ्चुद्यु** (añcu-dyu) *adj.* (a compound) with *-añc* as the last (derivative) member दिक्छब्दान्यारादितरतैः ऽञ्चुध्वा (? घ्वा) हियुक्ते JaineVyā. i. 4. 38 (70. 17) cf. **अञ्चूत्तरपद**.

**अञ्चू** (añc-ū) (Gr.) verbal root *añc-* (to go) अञ्चू गतौ च DhātuPā.(Sāk.) i. 337; अञ्चू इति पठन् शाकटायनः DhātuVr. i. 852; DhātuPā. (H.) 1. 105; अञ्चुञ् (v. l. अञ्चू) गते KaviKāDru. 100.

**अञ्चूर्ग** (añc-ūg) (Gr.) the verbal root *añc-* (to go) (*g* indicates the use of both r. ā.) अञ्चूर्ग गतौ च DhātuPā.(H.) i. 890.

**अञ्चूत्तरपद** (añcūttarapada) *adj.* (a compound) with *-añc* as the last (derivative) member अन्यारादितरतैः दिक्छब्दान् अञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते P. ii. 3. 29; अञ्चूत्तरपदं प्राकप्रत्यगादिपदम् BhāṭṭiCin. i. 105. 12 (on i. 1. 4); तथापि पराक्छब्दस्य अञ्चूत्तरपदत्वेन अञ्चूत्तरपदयोगनिमित्ता पञ्चमीयं कुतो न भवेत्... न तदर्थमञ्चूत्तरपदग्रहणं च कर्तव्यम्... अञ्चूत्तरपदप्रत्याख्यानमिप्रायेण दिक्छब्दत्वाभाव उपपादितः MayūMāli. 725. 9 (on x. 5. 11); LaSābdeSe. i. 503. 10.

**अञ्चोल** (añcola) *m.* name of a country अञ्चोलद्विचराश्च ये । कृत्वा त्रिधा सिंहवन्तं सीतागात् पश्चिमोदधिम् BrahmanḍP. i. 18. 45.

**अञ्ज** (añj-) VII(1), P. (Ā.) [ MAYE. 1. p. 32; अञ्ज (āñjū) व्यक्तिक्रक्षण(कान्ति)गतिषु DhātuPā. vii. 21; KṣiraTa. 7. 21; DhātuPra. 7. 21 (120. 14); DhātuVr. 7. 21; Nyāsa. iii. 997. 9 (on viii. 2. 48); used with Acc. of object and Inst. of means, or Loc. of place and Acc. of substance; with two Acc. S(?) RV. viii. 63. 1; recorded forms अनक्ति (Vedic अञ्जति), अङ्के, अनक्तन, अनजत्, अङ्कि, अनक्तु, अञ्ज्यात्, अञ्जीत, आनक्, आञ्जन्, अञ्जत (without aug.), आनञ्ज, आनजे, अनजा, अनज्यात्, आञ्जित्, आञ्जीत्, अञ्जीः, अञ्जते; used with the preverbs अनु (SātBr. अनुवि AVPrāti.), अभि (RV. अभिवि, अभ्या AitBr.), आ (RV.), उद् (RV.) उप (SātBr.), नि (AV.), प्रति (AitĀ. प्रत्युप SātBr.), वि, सम् (RV. संनि SātBr.), समा and *gati* अन्तर] **A i** to anoint, to besmear, to cover with, to consecrate (with any liquid substance) स दक्षिणां दक्षपतिर्भूवाञ्जति यं दक्षिणतो हविर्भिः RV. i. 95. 6; युवां युजैः प्रथमा गोभिरञ्जत क्रतावाना RV. i. 151. 8; अनक्ति यद्वा त्रिदशेषु होता RV. i. 153. 2; अञ्जन्ति त्वामध्वरे देव्यन्तः... मधुना RV. iii. 8. 1; TaiBr. III. vi. 1. 1; मधोर्धाराभिरज्यसे RV. iii. 40. 6; पश्वो अनक्ति सुधितः समेकैः RV. iv. 6. 3; शुचिरङ्के शुचिभिर्गोभिरग्निः RV. v. 1. 3; v. 3. 2; v. 43. 7; आयुं न यं नर्मसा रातहव्या अञ्जन्ति सुप्रयसं पञ्च जनाः RV. vi. 11. 4; अग्निर्देवीं अनक्तु नः RV. viii. 39. 1; viii. 63. 1; मध्वा होतारो अञ्जते RV. viii. 72. 9; सोमासो गोभिरञ्जते RV. ix. 10. 3; ix. 32. 3; ix. 66. 9; इन्दुर्हिन्वानो अञ्जते मनीषिभिः RV. ix. 76. 2; ix. 78. 2; ix. 102. 7; ix. 109. 20; भर्गो वा गोभिरर्थमेनमज्यात् RV. x. 31. 4; x. 76. 1; x. 100. 10; x. 118. 3; अङ्कि संवर्तयां पणिम् RV. x. 156. 3; अजर्मनञ्मि पर्यसा घृतेन AV. iv. 14. 6; देवः पृथो अनक्ति मध्वा घृतेन AV. v. 27. 1; v. 28. 3; अश्विना सार्वधेर्मा मधुनाइतं शुभस्पती AV. vi. 69. 2; देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु TaiS. I. iii. 5. 1; VājaS. 6. 2; याङ्के तस्यै क्राणः TaiS. II. v. 1. 7; III. iii. 10. 2; घृतेनाक्तौ पशुं त्रयैथाम् TaiS. I. iii. 8. 1; VājaS. 6. 11; 20. 39; 27. 12; अध्वरे ह्येनं देवयन्तोऽञ्जन्ति AitBr. 6. 2 (142); खर्मइक्ष्व त्वचर्मइक्ष्व TaiBr. III. vii. 5. 2; इमान् एवेतलोकान् रसेनानक्ति JaimiBr. 1. 72; घृतेन समिधोऽनक्ति GopBr. i. 2. 15; नाधीयीत...नाङ्के BaudhSS. i. 298. 5; इलामुपह्वास्यामानस्य दक्षिणस्य पाणेः प्रदेशिन्यामनक्ति SāṅkhāSS. i. 10. 1; iv. 16. 6; अनक्यग्राणि जुह्वाम् MānSS. 23. 8; देवस्त्वा सविता मध्वानक्तीति सुवेण पुरोडाशमनक्ति ĀpaSS. ii. 11. 3; iii. 5. 7; xviii. 14. 8; xxiii. 7. 8; iii. 14. 7; अञ्जन्ति घर्मं तत्र शाङ्गम् LātyāSS. i. 6. 23; पुरोडाशौ... अनक्ति KātySS. ii. 8. 14; स्त्रीणामक्षीण्यनक्ति KauśiGS. v. 8. 5; नाङ्कते BaudhGS. i. 7. 29; सव्यं अग्ने अक्षि अञ्जीत अथ दक्षिणम् JaimiGS. 6. 19 (17. 19); अञ्जनानुलेपनं स्रजश्चाञ्जस्वानुलिम्पस्व स्रजोऽभिनहस्वेति PāraGS. ii. 14. 17; ताभिरङ्किः पुत्रकामो मुखमनक्ति ĀśvaGS. iv. 7. 13; i. 8. 9; अथ परिधीननक्ति BaudhGS. i. 4. 35; VaikhāGS. 4. 1 (54. 10);

बहिराज्यशेषेऽनक्ति KauśiSū. 6. 5; 25. 4; कृष्णचतुर्दश्यां शखहतायाः गोः कपिलयाः पित्तेन राजवृक्षमयीममिन्नप्रतिमामञ्ज्यात्; अन्धीकरणम् ArthSā. iii. 235. 6 (14. 3); त्रिरात्रं रजस्वला शुचिर्भवति सा नाञ्ज्यात् VasiSm. 5. 7; अनक्ति हृदये तस्या दध्नालामे घृतं च तत् LaghvāśvaSm. 15. 53; आज्येन यूपमनक्ति SābaBh. 1133. 8 (on iii. 8. 31); शलाकया सुवर्णस्य अक्षिणी... । अञ्जयेत् AgniP. 96. 51; TupT. 19. 12 (on iv. 2. 1); इन्दुर्नेत्रे सुधाभिरनक्ति नः AnarghaRā. 2. 69; प्रथमं सव्यमञ्ज्यात् SiddhYo. 61. 17; मौर्यवंशाब्धिचन्द्रमाः । अनक्ति स स्वयमपि नेत्रे तप्तशलाकया PariPar. 9. 29; यजमानः स्वमुखमञ्ज्यात् CaturCin. iii(1). 1297. 13; अनक्ति स नयने क्षणात् SamarāSam. 6. 116; ViraMi. (Suddhi.) 11. 6; **A ii** to anoint with, to bathe in, to put on (lustre, ray etc.) पूर्वं अर्धे रजसो भानुमञ्जते RV. i. 92. 1; देवासो विश्वधायसुस्ते माञ्जन्तु वचसा AV. iii. 22. 2; xviii. 3. 10; वसवस्वाञ्जन्तु गायत्रेण छन्दसा TaiS. VII. v. 20. 1; VājaS. 23. 8; वचसा माञ्जीः TaiĀ. iv. 10. 4 (492. 1); ते जसैर्नमनक्ति TaiĀ. v. 4. 5 (605. 1); भिस्त्वा शनैस्तिमिरमञ्जनपुञ्जनीलमानञ्जुरिन्दुकिरणा जगदञ्जसारात् HarVi. 20. 52; **A iii** to besmear, to cover with, to endow with (abstract things) त्वम्...मायागुणैर्नाज्यसे AdhyaRā. vii. 1. 63; न हि श्रोत्रोत्थविज्ञानं रूपवासनयाज्यते BrĀraUBhVā. ii. 3. 108; प्रकृतिस्थोऽपि पुरुषो नाज्यते प्राकृतैर्गुणैः BhāṅP. iii. 27. 1; xi. 6. 8; कथमज्यते जगदशेषमिदं कलयन्मृषेति हृदि कर्मफलैः SāṅkaDigVi.(Mā.) 9. 95; **B** to put on, to decorate with (ornaments etc.) व्युच्छन्तीं रदिमग्निः सूर्यस्याञ्ज्यङ्के समनुगा इव त्राः RV. i. 124. 8; प्र शर्धाय मारुताय स्वभानव इमां वाचमनजा पर्वतच्युते RV. v. 54. 1; बभ्रुरेको विषुणः सूनरो युवाञ्ज्यङ्के हिरण्यथम् RV. viii. 29. 1; **C i** to make manifest, to reveal, to show (due to अञ्ज् with वि) पुरुदस्मो विषुर्पु इन्दुरन्तर्महिमानमानञ्जधीरः VājaS. 8. 30; तुभ्येत्सो अज्यते रयिः VājaS. 33. 82; अज्यते केनचित् [कश्चित्] किञ्चित्केनचिदज्यते MūlaMādhyāKā. 9. 5 (comm. अभिव्यज्यते); मा नाञ्जी राक्षसीर्मायाः Bhaṭṭi. 9. 49 (comm. मा न व्यतीकुरु); तदाट्टशुष्यं प्रति वैविद्युम्याञ्जीञ्चुलुक्यश्च समाधिलग्नः DvyaśraKā. 10. 67; **C ii** to praise, to extol इमां ते धियं प्र भरे मद्दो महीमस्य स्तोत्रे धिषणा यत् आनजे RV. i. 102. 1; **D** to unite, to join together जने मित्रो न दर्पती अनक्ति RV. x. 68. 2.

**अञ्ज** (añj-) x. [ अजि...भासार्थाः । एते सकर्मका भासार्था णिचमुत्पादयन्ति KṣiraTa. x. 245; DhātuPra. 7. 21 (120. 15); अजि... इत्येते पंचदश स्वामिकाश्यपानुसारेण लिख्यन्ते । भासार्थाः DhātuVr. x. 245 ] to anoint, to besmear, to apply collyrium काचिदञ्जनमादाय नेत्रे अज्यति ध्रुवम् ĀdiP. 25. 34; वृक्षमूले कज्जलं संगृह्य... । नेत्राण्यञ्जयेत् BhaviP. 63A. 13 (i. 29. 25); EI. xxi. 48. 28; कज्जलेनाञ्जयेतेन लोचने प्रयतो नरः Mānaso. ii. 3. 344; तेन पांसुनाक्षं रथस्याञ्जयेत्लिम्पेत् VedāntKa. 452. 23 (on iii. 3. 40); निर्घृथ्य नृकपालं तु नारीस्तन्येन चाञ्जयेत् RasRaSa. 23. 55; 23. 54; मनुष्यलालया घृष्टा ततो नेत्रे तयाञ्जयेत् RaseCin. 9. 357 (271. 4); अञ्जयेद्द्रिपमेतेन HastyaYur. 636. 10 (4. 14); गोरोचना प्रियङ्गुर्मनःशिला नागपुष्पचूर्णं च । अञ्जयेच्चक्षुरमीभिर्यस्तस्य वशत्वमेति जनः NāgaSa. 12. 12; समानिनाय पुरतो नयने तेन चाञ्जयत् KathāKau. 2. 52; 13. 24; NirSi. 248. 1; अञ्जयेन्मतिमान्वेद्यः ĀśvaVai. 30. 20; विलोचने नाञ्जयति स तारम् BhāvS. 32.

**अञ्ज** (añja) *m.* (hollow of) both hands joined together प्रसृतैककरे वै तु प्रसृतिः... उक्तपाणिद्वये प्रोक्तश्चाञ्जलिश्चाञ्ज इत्यपि ParyāSāRa. 656.

**अञ्जक** (añj-aka) *adj.* (a word) indicative of (similarity) अन्यतमस्य च लोपे वाचकधर्मोपमानानाम् । धर्माञ्जकयोरञ्जकसमयोः समधर्मयोः समान्येषाम् AlaṅkāKau.(Vi.) 104. 11; (उपमा) न वाक्यजाञ्जकलुक् AlaṅkāKau.(Vi.) 117. 6; *m.* name of a son of Vipracitti and Simhikā (सिंहिकायामथोत्पन्ना विप्रचित्तेः सुताः) अञ्जको नरकश्चैव... । स्वर्भानुश्च ViṣṇuP. i. 21. 11 (VIDYĀSĀGARA Ed.)

**अञ्जकेश** (añjakeśa) *m.* name of a king मु( v. l. अ )ञ्जकेश इति ख्यातः...आसीत् स पार्थिवः MāhāBhā. i. 61. 26.

**अञ्जत्** (añjāt) *adj.* anointing, besmearing, decking, adorning स्वरुं न पेशो विदधेऽञ्जन् RV. i. 92. 5; समिद्धो अञ्जन् कृदंरं मतीनाम् TaiS. V. i. 11. 1; उपयामेऽञ्जन् समिध आदधाति MānSS. 110. 9; ĀpaSS. xv. 11. 6; तिमिरहतमयं महोभिरञ्जयति जगन्नयनौघमुष्णभानुः AnarghaRā. 2. 13; अञ्जित्वाक्षीणि विलोककानाम् Rāgh. 20. 9.

**अञ्जना** (añj-ana) *n.* [for accent cf. आञ्जन; अञ्जनामञ्जनं च प्रकाशनम् । अञ्जेऽक्षिणी इत्युच्यते यत्तिसितं चासितं चैतत्प्रकाशयति MāhāBh. iii. 408. 23 (on viii. 2. 48); अज्येते येनाक्षिणी तदञ्जनम् Pradi. vii. 123. 16 (on viii. 2. 48); included in the *gośadādi gaṇa* GaṇPā. 80. 10; GaṇRa. 7. 436 (460); *añjanādi*, *kinśulakādi* GaṇPā. 50. 4; GaṇRa. 2. 141 (177); CāndraVr. on iv. 2. 156; JaineVyā. iv. 1. 66; neut. gender is given by Liṅgānu.(Ha.)